विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

घर-घर औषधि उपवन

आज से 40 वर्ष पहले, प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य जिन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा से मुझे आयुर्वेद के सभी आठ अंगों में प्रशिक्षित किया, से वनों में औषधियां एकत्र करने के बीच मैंने एक सहज प्रश्न किया कि आदर्श स्थिति में औषधालय कहाँ स्थित होना चाहिये। उत्तर था, जहाँ औषधीय वन और आयुर्वेदाचार्य, वहीं औषधालय। यह उत्तर आज भी यथावत प्रासंगिक है। हाँ, यदि समीप में वन न हों तो आप औषधीय पौधों का उपवन लगा सकते हैं।

औषधीय पौधों पर प्राचीन संदर्भ 4500 ईसा पूर्व ऋग्वेद में मिलता है। बाद में आयुर्वेदिक संहिताओं और ग्रंथों में इस विषय पर गंभीर और विस्तृत विवेचन हुआ है। प्राचीन काल से ही औषधीय पौधों की परिभाषा पर मंथन होता आया है। एक बड़ा प्रसिद्ध श्लोक है (शुक्रनीति: 2/126): अमंत्रं अक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्। अयोग्य: पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभ:।। तात्पर्य कोई अक्षर नहीं जो मंत्र में काम न आये,कोई जड़ी नहीं है जो औषधि न हो। कोई व्यक्ति अयोग्य नहीं होता,बल्कि इन सब को जोड़ने वाला व्यक्ति ही दुर्लभ होता है।

आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी एवं सोवारिगपा एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों में प्रयोग होने वाली औषधियां मुख्यतया पेड़-पौधों से प्राप्त होती हैं। यही कारण है कि वनों से निरंतर अति-दोहन के कारण अब औषधीय पौधों की अनेक प्रजातियाँ संकटापन्न होने से दीर्घकालीन संरक्षण, संवर्द्धन एवं खेती हेतु रणनीति बनाकर क्रियान्वित करना आवश्यक है। इनमें प्राकृतिक आवास में यथा-स्थान संरक्षण, व्यापारिक खेती, उपवनों, बाग़-बगीचों, कृषिवानिकी और वृक्षारोपण क्षेत्रों में संरक्षण, संवर्धन, डोमेस्टीकेशन तथा नई किस्मों का विकास आदि शामिल हैं। राजस्थान सरकार द्वारा प्रारम्भ की गयी घर-घर औषधि योजना केवल सरकार की नहीं हर घर का अभियान है। यह वृक्षायुर्वेद का व्यापक, अनूठा व नवाचारी क्रियान्वयन है। कहा जाता है जहाँ औषधीय पौधे और वैद्य हों वहीं औषधालय हो जाता है। आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, एवं सोवा रिगपा एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों में प्रयोग होने वाली औषधियां मुख्यतया पेड़-पौधों से प्राप्त होती हैं। वनों से निरंतर अति-दोहन के कारण अब औषधीय पौधों की अनेक प्रजातियाँ संकटापन्न होने से दीर्घकालीन संरक्षण, संवर्द्धन एवं उगाने हेतु रणनीति बनाकर क्रियान्वित करना आवश्यक है। इनमें प्राकृतिक आवास में यथा-स्थान संरक्षण, व्यापारिक खेती, उपवनों, बाग़-बगीचों, कृषिवानिकी और वृक्षारोपण क्षेत्रों में संरक्षण, संवर्धन, डोमेस्टीकेशन तथा नई किस्मों का विकास आदि शामिल हैं। आज की चर्चा घर-घर में औषधीय पौधों को उगाने की विधियों पर केन्द्रित है।

घर में औषधीय पौधे उगाने केसात सहज सूत्र हैं जो घर-घर को सुखदायी और आरोग्यकर बनाये रखते हैं।

पहली बात यह है कि घरों में औषधीय पौधों की उन प्रजातियों को उगाया जाना बहुत लाभकारी होता है जो रोजमर्रा की चिकित्सा हेतु प्रयोग में आती हैं। घर-घर औषधि योजना के अंतर्गत आयुर्वेद के चार श्रेष्ठतम औषधीय पौधे तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा, और गुडूची के पौधे वन विभाग की पौधशालाओं में उगाकर जुलाई-अगस्त से नवंबर-दिसम्बर माह के मध्य वितरित किये जायेंगे। इन्हें प्राप्त कर आप अपने बगीची में या गमलों में भी लगा सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि यदि आप इन प्रजातियों को तुरंत उगाना चाहते हैं तो तुलसी, कालमेघ और अश्वगंधा के उपयोग योग्य पौधे बीजारोपण से घर की बगीची में या अपार्टमेन्ट की बालकनी या टेरेस-गार्डेन में रखे माध्यम आकार के गमलों में उगाये जा सकते हैं। गुडूची या गिलोय की कलम भी बगीची या दो से तीन फीट गहरे और बड़े आकार के गमलों में रोपित कर लताओं-बेलों को सहारा देकर चढ़ाया जा सकता है। गुडूची के तने की कलम जिसमें कम से कम तीन नोड हों, को सीधी मिट्टी में लगा सकते हैं। कलम के एक नोड को मिट्टी में गाड़ देना चाहिए और कम से कम एक नोड ऊपर ताने के फुटान के लिये रखना चाहिये। गुडूची की कलम प्राप्त करते समय ध्यान दीजिये कि वायुवीय जड़ों की कलम नहीं लगायें। इनमें फुटान नहीं होगा। राजस्थान में प्राप्त होने वाले बीजों में से अश्वगंधा के एक मुट्ठी बीजों का वजन 20 ग्राम होता है और बीजों की संख्या 8,520 होती है। इसी प्रकार रामा तुलसी में एक मुट्ठी में 22 ग्राम बीज आते हैं और इनकी संख्या 48,400 होती है। कालमेघ के एक मुट्ठी बीच में 30 ग्राम बीज आते हैं जिनकी कुल संख्या 13,500 बीज होती है। इस प्रकार अश्वगंधा में 426 बीज प्रति ग्राम, तुलसी में 2,200 बीज प्रति ग्राम तथा कालमेघ में 450 बीज प्रति ग्राम आकलित गए हैं। यह गणना राजस्थान के एक सैंपल पर आधारित है और वैश्विक स्तर पर हुये आकलनों से इसमें थोड़ी-बहुत भिन्नता हो सकती है। लेकिन अनुमान के लिए यह आंकड़े उचित और पर्याप्त हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि बीज बहुत छोटे आकार के होते हैं और यदि आप गमलों या छोटी क्यारी में सीधी बुवाई करना चाहते हैं तो एक चुटकी से भी बहुत कम बीज चाहिये। इन बीजों को आप अपने आस-पास से एकत्र कर सकते हैं। पड़ोसियों या रिश्तेदारों से प्राप्त कर सकते हैं। इन्हें आप बाज़ार से भी खरीद सकते हैं।

घर-घर औषधीय पौधों का रोपण, सार-संभाल और उपयोग इन प्रजातियों के बारे में उपलब्ध पारंपरिक ज्ञान को विलुप्त होने से बचा सकता है। पौधों के रोपण और रखरखाव में बच्चों को साथ में लेकर चलने से इंडीजीनस-नॉलेज या पारंपरिक ज्ञान स्वतः ही अगली पीढ़ी को मिलने लगता है। स्थानीय ज्ञान को विलुप्त होने से बचाने का यह सबसे सशक्त माध्यम है।

तीनों प्रजातियों के बीज गमलों में या मिट्टी में खुरपी से खुदाई कर 1 से 2 सेंटीमीटर गहरे बुवाई कर दीजिये, बीज ज्यादा गहरे नहीं डालें। तुलसी, कालमेघ और अश्वगंधा के बीजों में थोड़ा राख मिलायें और गमले की मिट्टी या जमीन की क्यारी में ऊपर जरा सी राख की परत बुरक दें, नहीं तो चींटियाँ बीज ढोकर ले जाती हैं। बुवाई के पहले गमले या क्यारी की मिट्टी की सिंचाई करना जरूरी रहता है। लगभग 6 से 12 दिन के अन्दर तुलसी, कालमेघ और अश्वगंधा में अंकुरण पूर्ण हो जाता है। लगभग 8 से 12 दिन में तुलसी, 6-7 दिन में कालमेघ, और 6-10 दिन में अश्वगंधा में अंकुरण हो जाता है। अंकुरण होने तक बहुत हल्की सिंचाई करना चाहिये। उसके बाद आवश्यकतानुसार ही सिंचाई करना उपयुक्त रहता है। अगर बहुत से बीज गमले या क्यारी में अंकुरित हो गये हों तो आप इन्हें अंकुरण के तीन-चार सप्ताह के भीतर उखाड़कर अन्यत्र भी रोपित कर सकते हैं।

तीसरी बात यह है कि छोटे बाग़-बगीचों या अपार्टमेन्ट की बालकनी में रखें गमलों में तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय तो लगा ही सकते हैं पर घर-घर औषधि योजना को आप अपने स्तर पर सदैव के लिये आगे बढ़ाते हुये साल-दर-साल कुछ बहुउपयोगी पौधे उगा सकते हैं।अगर आप अपनी बगीची को इन चार महत्वपूर्ण प्रजातियों से आगे बढ़ाना चाहते हैं तो ध्यान रखें कि चुनी गई औषधीय प्रजातियाँ ऐसी हों जो भोजन, रसायन एवं औषधि तीनों में ही प्रयुक्त होती हों, त्रिदोषशामक हों, और विविध प्रकार के रोगों के विरुद्ध चिकित्सा में प्रयुक्त हो सकें। तिजोरी में धन और बगीचे में पौधों का संग्रह धीरे-धीरे ही होता है। अत: यदि आप एक साथ औषधीय पौधों की बुवाई या रोपण न कर सकें तो अपनी बगीची या अपार्टमेन्ट की बालकनी में प्रजातियों की विविधता को समय के साथ बढ़ाते रहें और अगली पीढ़ी को औषधीय पौधे और उनके उपयोग का ज्ञान दोनों देकर संपन्न बनायें।

चौथा यह है कि यदि आपके पास थोड़ी जमीन है तो बगिया का कुछ क्षेत्र ऐसा अवश्य हो जहां अनेक प्रजातियों के पौधे इस प्रकार लगाये जायें कि प्राकृतिक क्षेत्र का आभास हो। यदि बगीचे में अनेक औषधीय प्रजातियों के पौधे उगाना चाहते हैं तो इनमें से अधिसंख्य को बगीचे के एक कोने में बेतरतीबी से बहु-प्रजातीय रोपण करें। इसभाग में मानव दखल कम से कम करें ताकि प्राकृतिक वनों की तरह बीजोत्पादन, बीज विकीर्णन, पुनरुत्पादन जैसी पारिस्थितिकीय प्रक्रियायें समय के साथ अपने आप संचालित होने लगें।बगिया का यह सेमी-वाइल्ड हिस्सा बहुत मनोहारी, आरोग्यकर एवं उपयोगी होता है।

पांचवीं बात यह कि जैसा पहले कहा गया है, वन विभाग की पौधशालाओं में घर-घर औषधि योजना के अंतर्गत तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय के पौधे उपलब्ध कराये जायेंगे परन्तु बीज, कलम और पौधे प्राप्त करने के और भी तरीके हैं। सबसे आसान तरीका परिवारों के मध्य पौधों और बीजों का आदान-प्रदान है जो मानव सभ्यता के विकास के साथ ही विकसित हुआ है। उदाहरण के लिये, जब भी आप किसी परिवार की सुंदर बगीची देखें तो उनसे कुछ पौधे अवश्य मांग कर लायें और अपने बगीचे में लगायें। इसी प्रकार आप उन लोगों को भी कुछ पौधे उपहार में दें। घर की बगिया या गमलों में उग रहे औषधीय पौधे प्रमाणिक औषधि के साथ ही उत्तम बीजों का स्त्रोत भी हैं। अपने पड़ोसियों, मित्रों और संबंधियों के साथ बीजों का आदान-प्रदान हमारी पुरानी परंपरा है। यह परंपरा आज भी पूरे दुनिया में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। बीजों के इस आदान-प्रदान को सम्पूर्ण विश्व का समाज एक सुखद तोहफ़ा मानता है।

छठा, उपवन या बगीचे के आरोग्यकर, बहुउपयोगी एवं मनोहारी दृश्य का स्वास्थ्य पर गंभीर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। प्रतिदिन जब आप अपनी बगीची को शांत-चित्त होकर निहारते हैं तो आपमें स्वयं स्वस्थ रहने और परिवार को स्वस्थ रखने की उत्कट लालसा जागती है। यह दिव्य मनोवैज्ञानिक प्रभाव औषधि की तरह कारगर है। यह कथन कोरे उत्साहवर्धन के लिये नहीं, बल्कि विश्व में हरियाली और स्वास्थ्य के संबंधों पर प्रकाशित 6000 से अधिक शोध-पत्रों का निचोड़ है।

सातवाँ सूत्र, जैसा कि पूर्व में बताया गया है,यदि आपके पास जगह की कमी है या आप अपार्टमेंट्स में रहते हैं तो गमलों में भी अनेक प्रजातियों के पौधे उगाये जा सकते हैं। बगीचे में यदि पानी की कमी हो तो कम से कम वर्षा ऋतु में पौधों के इर्द-गिर्द थांवला बनाकर वर्षा-जल संरक्षण किया जा सकता है।

घर-घर औषधीय पौधों का रोपण, सार-संभाल और उपयोग इन प्रजातियों के बारे में उपलब्ध पारंपरिक ज्ञान को विलुप्त होने से बचा सकता है। पौधों के रोपण और रखरखाव में बच्चों को साथ में लेकर चलने से इंडीजीनस-नॉलेज या पारंपरिक ज्ञान स्वत: ही अगली पीढ़ी को मिलने लगता है। स्थानीय ज्ञान को विलुप्त होने से बचाने का यह सबसे सशक्त माध्यम है। मेरा दीर्घकालिक व्यक्तिगत अनुभव है कि जैसे-जैसे पारंपरिक रूप से उगाये जाने वाले पौधे हमारे आसपास से विलुप्तप्राय होने लगते हैं, वैसे-वैसे पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी में स्थानीय ज्ञान का आदान-प्रदान भी रुकने लगता है। आज विश्व भर में पीढ़ियों से संचित स्थानीय ज्ञान के समाप्त होने का यह मूल कारण है। पीढ़ियों से संजोये जा रहे स्थानीय ज्ञान का प्रयोग कर औषधीय पौधों की सार-संभाल जनोपयोगी जैव विविधता के संरक्षण की ठोस रणनीति भी है। औषधियों के बारे में पारम्परिक ज्ञान के क्षरण को रोकने में घर-घर औषधि योजना का बड़ा योगदान हो सकता है। घर में औषधीय पौधों का रोपण देश, समाज और परिवार के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बगिया में उग रहे पौधे सहज ही स्वस्थ रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। घर में आज उगाये गये औषधीय पौधे कल हमारे प्रियजनों की भी जान बचा सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

क्या अवसाद का सही उपचार हो रहा है?

अवसाद को ज्यादातर लोग डिप्रेशन के नाम से जानते हैं। यह बड़ी संख्या में पाई जाने वाली मन की एक बीमारी है जिससे भारत के कोई एक करोड़ लोग हर साल प्रभावित होते हैं।

अवसाद वह मानसिक अवस्था होती है जिसमें कोई व्यक्ति उदास रहने लगे, जीवन की दिनचर्या के प्रति उदासीन हो जाए और उत्साह को खो देता हो। उसकी बातों में नकारात्मकता आ जाती है, निराशा उसके व्यक्तित्व का एक हिस्सा हो जाती है। अवसाद की इस हालत में व्यक्ति आत्महत्या तक भी कर सकता है। इस तरह से हम देखते हैं कि अवसाद अर्थात डिप्रेशन एक बड़ा रोग है जिसका निदान एवम् उपचार होना आवश्यक है। निदान सदा एक अनुभवी चिकित्सक द्वारा ही करवाना चाहिए।

अब जो बड़ी समस्या आती है वह निदान के बाद की है। जब यह सवाल उठता है कि रोग का तो पता चल गया, अब किया क्या जाए। सन् 1960 के दशक में कुछ दवाइयां उपलब्ध हुई जो कि हमारे रक्त और मस्तिष्क में एक हार्मोन सेरोटोनिन के स्तर तो बढ़ाती हैं। इन दवाओं से अवसाद के रोगी को काफी प्रारंभिक फायदा हुआ तो यह माना जाने लगा कि शरीर में सेरोटोनिन का स्तर कम होने से व्यक्ति अवसाद में चला जाता है।

आगे चलकर ज्यों-ज्यों विश्व में शहरीकरण होने लगा, जीवन में जीविकोपार्जन का संघर्ष बढ़ने लगा तो बड़ी संख्या में लोग अवसाद में जाने लगे। समय के साथ अवसाद की दवाओं की बिक्री वैश्विक स्तर पर लाखों करोड़ रुपयों की होने लगी। डॉक्टर्स और दवा की कंपनियां सब सेरोटोनिन सिद्धांत को सहारा देने लगे। कोई 80 प्रतिशत लोग भी मानते हैं कि डिप्रेशन की दवाएं जो सेरोटोनिन बढ़ाती हैं वे ही एकमात्र सहारा हैं। पर क्या दवाओं के बड़े उपयोग के बाद भी धरती से अवसाद कम हुआ?

जवाब सदा ना में ही रहेगा।

ब्रिटेन में एक बड़े अध्ययन के अनुसार डिप्रेशन के रोगियों में सेरोटोनिन का रक्त स्तर तकरीबन सामान्य ही पाया जाता और अभी तक

डॉ. रामावतार शर्मा

किसी भी अध्ययन में यह पूर्णतया सिद्ध नहीं हुआ है कि किसी रसायन की कमी से व्यक्ति अवसाद में जाता है। इस अध्ययन में कोई 165,000 लोग शामिल हुए थे। यह अध्ययन दो बातें सिद्ध करता है। पहली तो यह कि चूंकि दवाएं विकसित हो गई थी, कुछ फायदा भी पहुंचाती थी इसलिए इस बात को आसानी से मान लिया गया कि सेरोटोनिन की कमी से ही डिप्रेशन रोग का रूप ले लेता है। दूसरे, रोगी को कुछ सहारा दवा के रूप में मिल गया और चिकित्सक को रोगी मिलने लगे। बस डिप्रेशन अरबों रुपए का व्यापार हो गया। सरकारों को खूब टैक्स मिलने लगा और एक आधा अधूरा इलाज पूरे विश्व में प्रसारित हो गया। ऐसा नहीं है कि दवाएं पूरी तरह निरर्थक हैं पर हर निष्पक्ष चिकित्सक जानता है कि दवाओं की सहायता से कोई रोगी डिप्रेशन के चक्रव्यूह से बाहर नहीं निकल सकता है। उसे बस थोड़ा सहारा और समय मिल जाता है।

ब्रिटेन में हुई शोध की अग्रणी प्रोफेसर जोआना मॉन्क्रीफ का कहना है कि अवसाद के लिए काम में ली जाने वाली दवाओं का उपयोग प्रश्नों के घेरे में है। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के मनोचिकित्सक डॉक्टर मार्क होरोविट्स के अनुसार भी सेरोटोनिन या अन्य रसायनों का डिप्रेशन से कोई सीधा संबंध नहीं है। इन्ही दोनों बातों का समर्थन बोस्टन की टफ्ट यूनिवर्सिटी के डॉक्टर नसीम घाएमी ने भी किया है। एक अन्य अध्ययन में टोरंटो महाविद्यालय के डॉक्टर रॉजर मेलंटायर ने भी सेरोटोनिन और अवसाद में किसी सीधे कारण और प्रभाव से इंकार किया है। ये सभी विशेषज्ञ शोधकर्ता मानते हैं कि डिप्रेशन का पूर्ण उपचार दवाओं से संभव नहीं है। यहां दवाएं उसी तरह से काम करती हैं जैसे बुखार में पैरासिटामोल। बुखार तो एक बार उतर जायेगा।

पर बीमारी वहां की वहां ही रहेगी और समय के साथ बढ़ेगी भी।

अवसाद को मिटाना है तो उसके कारणों का विश्लेषण करना पड़ेगा। कारण अधिकतर मामलों में व्यक्तिगत रिश्तों में दरारें, गरीबी, बेरोजगारी, अहंकार, प्रतिस्पर्धा, अति महत्वाकांक्षा, निकम्मापन, अकुशलता, हिंसा, द्वेष, घृणा, भेदभाव, पक्षपात आदि होते हैं। समाज निष्ठुर है, आबादी घनी है, संसाधन कम हैं और सामाजिक सौहार्द गायब सा हो गया है। अपने संघर्ष में हर कोई अपने आप को अकेला पाता है तो अवसाद ही होगा। जो भी व्यक्ति अपनी बौद्धिक चेतना को विकसित नहीं करता उसके अवसाद में जाने की संभावनाएं बनी ही रहेंगी। जीवन का आनंद पाना है तो बौद्ध बनो या फिर बुद्धू।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

घर-घर नल योजना में लाखों रुपए खर्च, शुरू नहीं हुई जलापूर्ति

भीम, (निसं)। शुद्ध पेयजल के लिए घर-घर नल योजना में लाखों रुपए खर्च होने के बाद भी जलापूर्ति शुरू नहीं हो पाई और दो साल पहले स्वीकृति के बाद भी पक्की सड़क का कार्य शुरू नहीं हो पाया। ये हालात भीम प्रधान वीरमसिंह रावत के गृह क्षेत्र भरतवा गांव के हैं, जो डूंगरखेड़ा ग्राम पंचायत के अंतर्गत आता है। प्रधान बीरमसिंह ने राजनीतिक द्वेषता से कार्य अधूरा होने का आरोप लगाया है। कुएं में पर्याप्त पानी है, टंकी भी बन गई, फिर भी घर-घर नल पहुंचाने का कार्य जलदाय विभाग ने रोक दिया। इससे जलदाय विभाग, पीडब्लूडी के साथ पूरे प्रशासनिक तंत्र पर ही सवाल खड़े हो रहे हैं।

जानकारी के अनुसार राजसमंद जिला मुख्यालय से करीब डेढ़ सौ और भीम उपखंड मुख्यालय से पचास किमी. दूर स्थित भतरवा गांव के विकास में राजनीतिक खींचतान भारी पड़ रही है। इस गांव में सड़क, पानी व नाली की प्राथमिक सुविधाएं भी शासन प्रशासन और जिम्मेदार महकमे उपलब्ध नहीं करवा पाए। खास बात यह है कि पक्की सड़क के लिए दो साल पहले स्वीकृति जारी हो गई, लेकिन कार्य अभी तक शुरू नहीं हो पाया। दूसरी तरफ जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा घर-घर नल पहुंचाने की योजना के तहत दो कुएं खोद दिए, टंकी बना दी और गांव में ऐसे ही प्लास्टिक का

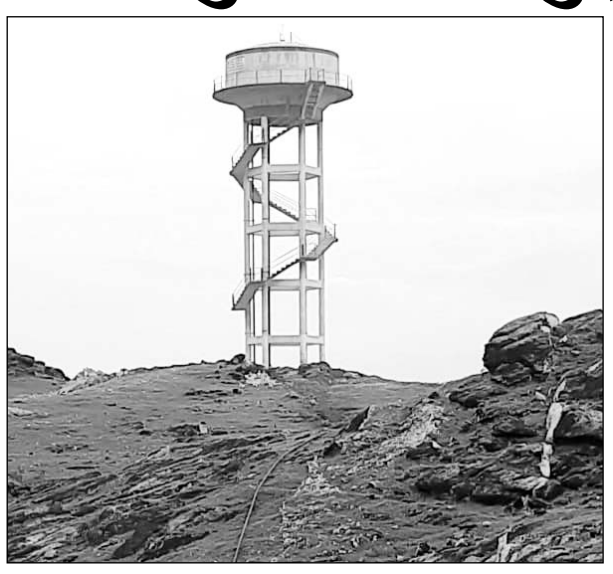

डूंगरखेड़ा ग्राम पंचायत के भरतवा गांव में निर्मित पानी की टंकी एवं कुआं लेकिन ग्रामीणों को जल आपूर्ति नहीं हो रही है।

पाइप भी रख दिया, लेकिन न तो घर घर नल दिए गए और न ही जलापूर्ति शुरू की गई। पाइप को ठीक से जोड़ा भी नहीं और पाइप की ज्वाइंट भी बिना क्लिप के किया, जिससे कार्य की गुणवत्ता को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। एक दिन टंकी से पानी छोड़ा, जिससे कई जगह से पानी निकलने लग गया, तो जलदाय विभाग द्वारा जलापूर्ति रोक दी और दो माह बाद भी जल वितरण व्यवस्था शुरू नहीं हो पाई है।

भीम प्रधान बीरमसिंह रावत ने बताया कि भरतवा गांव का विकास राजनीतिक द्वेषता से रूका हुआ है। एसडीएम से लेकर कलैक्टर तक को शिकायत कर दी और जिला परिषद साधारण सभा में मुद्दा उठाया, मगर अभी तक कार्रवाई तो दूर उनकी सुनवाई तक नहीं हो पाई। ऐसे में सवाल उठ रहा है जब प्रशासन द्वारा एक जनप्रतिनिधि

- **भीम प्रधान के गृह क्षेत्र भरतवा गांव का मामला**
- **टूटी सड़कें व घर-घर नल योजना भी अधूरी**
- **सरकारी कुएं, टंकी होने के बाद भी लोग 1-1 किमी. दूर से पानी लाने को मजबूर है**

की बात पर ध्यान नहीं दिया, तो आम लोगों की समस्या का समाधान किस तरह होता होगा, यह यक्ष सवाल हर किसी के जेहन में है।

लक्ष्मीदेवी रावत, गृहिणी भरतवा ने बताया कि पेयजल सुविधा के नाम पर टंकी बनाकर व अधूरा पाइप डालकर फॉर्मलिटी पूरी की है। अभी तक न तो पानी मिला है और न ही समस्या का समाधान हुआ। जलदाय विभाग भी उदासीन है, इसलिए ठेकेदार मनमानी कर रहा है। ठेकेदार का पेमेंट तत्काल रोका जाए। लक्ष्मणसिंह रावत, ग्रामवासी भरतवा ने बताया कि पाइप लाइन सिर्फ दिखावे की है। कोई काम नहीं किया है। एक दिन दिखावे के तौर पर पानी चालू किया, जो कई जगह निकला। सरकारी पैसो का दुरुपयोग किया है। पाइप लाइन में कोई क्वालिटी नहीं है। मोहनसिंह रावत, ग्रामवासी भरतवा ने बताया कि सरकारी कुएं, टंकी होने के बाद भी लोग 1-1 किमी. दूर से सींचकर पानी लाने को मजबूर है। सड़क जर्जर हो गई, मगर ठीक नहीं हो रही है। आखिर हमारी सुनवाई प्रशासन द्वारा क्यों नहीं की जा रही है।

बीरमसिंह रावत, प्रधान भीम ने बताया कि भीम क्षेत्र में हर कार्य में घोटाला हो रहा है और हर जगह राजनीतिक द्वेषता देख सकते हैं। पीएचईडी के ठेकेदार ने पूरी सडक़ तोड़ दी। नई सडक़ दो साल पहले स्वीकृत हो गई, मगर अभी तक कार्य शुरू नहीं किया। भतरवा में नल योजना में जो कार्य किया है, वह भी घटिया स्तर का हुआ है। इसकी जिला स्तर तक शिकायत कर दी। फिर भी न तो पीडब्लूडी अभियंता आए और न ही जलदाय विभाग ने कोई जांच की। बलराम मीणा, सहायक अभियंता पीडब्ल्यूडी भीम ने बताया कि सारोठ से मिराला की पोल वाया भरतवा का बाडिया सड़क संवेदक की गारंटी अवधि में है जिसे सही कराने के लिए पत्राचार किया जा रहा है बरसात मौसम के उपरांत पुन: सही करवा दिया जाएगा। मुख्य सड़क से भरतवा डामरीकरण सड़क रिनुअल में स्वीकृत है जिसे बरसात के मौसम के बाद निर्माण कार्य शुरू करवा दिया जाएगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल की विशाल प्रतिमाएं कोटा पहुंचीं

कोटा, (निसं)। गनमेटल से बनी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार बल्लभ भाई पटेल की विशाल आकर्षक प्रतिमाएं कोटा जेडीबी कॉलेज के सामने स्थापित की जा रही है तीनों महापुरुषों की आकर्षक प्रतिमाएं आपस में वार्ता करती नजर आएंगी।

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल की पहल पर कोटा में लगातार विकास एवं सौन्दर्यकरण के अभूतपूर्व कार्य प्रगतिशील है इसी कड़ी में कोटा नगर विकास न्यास द्वारा यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल के निर्देशन में अंटाघर से आकाशवाणी तक सौन्दर्यकरण कार्य के तहत पूरे क्षेत्र में केमिकल वाश के साथ आकर्षक लाइटिंग के कार्यो के साथ 15 टन वजनी, आकर्षक, तीनों महापुरुषों की

कोटा में महापुरुषों की विशाल प्रतिमाएं पहुंच गई हैं।

वार्ता करती विशाल प्रतिमाए स्थापित की जा रही है न्यास सचिव राजेश जोशी ने बताया कि पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार बल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा है जयपुर से निर्मित होकर कोटा पहुंच चुकी है इनकी लंबाई 12 फीट व 14 फीट दोनों प्रतिमाओं का बेस भी 12 से 14 फीट का है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा अगले सप्ताह तक कोटा पहुंचेगी

- **'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल की वार्ता करते स्थापित हो रही हैं प्रतिमाएं'**

इसके बाद तीनों प्रतिमाओं को एक ही स्थान पर स्थापित किया जाएगा। प्रतिमा स्थल के दोनों और आकर्षक फाउंटेन और लाइटिंग का कार्य भी करवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि तीनों महापुरुषों की प्रतिमाओं के निर्माण एवं अंटाघर से आकाशवाणी तक सौंदर्यकरण के कार्य की लागत लगभग 3.50 करोड़ है। यह आकर्षक प्रतिमाओं कारीगरों द्वारा करीब 4 महीने का निर्मित किया गया है।

राशिफल रविवार 21 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र सोमवार प्रात: 7:41 तक, हर्षण योग रात्रि 10:38 तक, वणिज करण दिन 2:22 तक, चन्द्रमा सांय 6:09 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से प्रात: 7:41 तक है। भद्रा दिन 2:22 से रात्रि 3:36 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:41 से 9:17 तक, लाभ-अमृत 9:17 से 12:30 तक, शुभ 2:06 से 3:43 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:05, सूर्यास्त 6:55

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। वाणी पर नियन्त्रण रखना ठीक रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल ऊंचा बना रहेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

मिथुन
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आर्थिक कारणों से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला
अपनी कार्य योजना को आज और सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण और अति आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वाद-विवाद के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।